साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

पूरबी बेयरिया उडावे चुनरिया, बांध के प्रीतिया के डोर.....

जनकदेव जनक

“दूर संचार के माध्यम से आज पूरी दुनिया हमारी मुट्ठी में है. पल पल की खबरों और संदेशों का अदान प्रदान होता है. एक समय ओ था जब कालीदास की नायिका अपना संदेश पहुंचाने के लिए मेघदूत का सहारा लेती थीं. उसके बाद कबूतर, तोता, पंडुक, हंस, पथिक आदि संदेशवाहक बनते रहे. युग परिवर्तन हुआ. चिट्ठी-पत्री संदेश पहुंचाने का माध्यम बना.आज वह भी विलुप्त हो रहा है. आयें, इस आलेख के माध्यम से सावन की महिमा, सौदर्यबोध और नायक नायिकाओं के संयोग वियोग की हृदयस्पर्शी भावनाओं में कुछ पल गोता लगावे. “

सावन तो साक्षात प्रेम, उल्लास, उत्साह और उमंग का महीना है. उसकी प्रकृति में तो तन और मन दोनों साथ साथ भींगता है. सावन और सुहागन का रिश्ता अटूट है, जो जग जाहिर है. रिमझिम वर्षा में भींगता तन बदन किसी के मिलने की आस जगाता है. प्राकृतिक सुषमा मन में खुशियों का उदबेग बढ़ाती है, जब सामने हरे-भरे वन-उपवन में पावन, निर्मल निर्झर बहता झरना हो , ऐसे मन भावन बेला में किसका मन अंगराई नहीं लेगा ! लगता है काले-काले मेघों से होकर कोई नयी नवेली नायिका धानी चुनर ओढ़े बलखाती हुई धरा पर उतर आई हो.

“हरिहर गोटेदार लहंगा
तन से चुनर उडल जाये रे,
खनखन करे चूड़ियां
रूनझुन बाजे पैजनियां,
माथे के बिंदिया बिजुरी गिरावे रे.... ”

एक तो मन भावन बेला, दूसरे परदेसी पिया घर से दूर. नभ में उमड़त-घुमड़त घनघोर घटाएं,आकर्षित करती हसीन बहुरिया की प्रीत, रोज-रोज सजना के नाम की मेंहदी रचाना , बंद कंचुकी में कसमसाते यौवन के साथ आंगन में आना, सोलहों श्रृंगारकर पिया

की राह निहारना और चांद रात में चंद्रमा को देखना, इन विषम परिस्थितियों में चंद्रमा को अपने बाहूपाश में पकड़ने के लिए नायिका आतुर हो जाती है.

“जब हम रहनी लइकी नदान,
तब पियवा बइठे रखवार नूं हो,
जब हम भइनी बालिग सियान ,
तब बालमा गइल परदेस नूं हो...”

परदेसी पिया नहीं आया, नायिका उदास है. उसके घर के पिछवाड़े कैथा भैया का घर है, जिससे चिट्ठी लिखवाने के लिए बेचैन है, ताकि अपनी विरह वेदना को पड़ोस के नाई से संदेश नायक तक पहुंचा सके.

“मोर पिछवाड़वा कैथा भैइया हितवा
लिखी देहीं नायक जोगे चिट्ठियां नूं हो,
घर के पिछवाडवा हजमा भइया हितवा
नायक जोगे चिट्ठियां चहुंपा देही नूं हो....”

कदम की डाल पर झूला लग गया है. उसको देखकर नायिका को अपना पीहर याद आता है. बचपन की सखियों की चुहलबाजी उसके मन में उदबेग जोतता है. वह अपने साजन से नैहर जाने की गुहार लगाती है.

‘सावन में आये मोहे नैहर की याद
बीते थे जो पल सखियों के साथ
कर दे वीरा कुछ ऐसा जतन
मोहे नैहर जाने दे मेरे साजन’

सावन में पूरबा हवा और सुहागिनों का चोली दामन का रिश्ता है. जब बन ठनकर नायिका घर की बालकोनी में खड़ी होती है तो शरारत करती पूरबी हवा नायिका के आंचल को वक्षस्थल से नीचे सड़का देती है. तब उसे अपनी नटखट सहेलियों की याद सताती है.

‘‘ पूरबी बेयरिया उड़ावे चुनरिया
बांध के पिरितिया के डोर,
अबकी बरस भइया के भेजी बाबुल,
सावनवा में लिहीं ना बुलाय.....”,

प्रचंड गर्मी की ताप से झुलसी धरती, उजड़ा वन उपवन, निर्जन और विरान

हो जाता है. उसी समय जब वर्षा रानी का आगमन होता है तो निरसता सरसता में बदल जाती है. वर्षा की बूंदे पड़ते ही शुष्क धरा सोंधी महक से गमक उठती है. वैसे स्थिति में पिया परदेसिया के बेरूखी पोर-पोर में आग लगा देता है. तब नायिका की ननद उससे चुहलबाजी करती है. जिससे उसकी व्यथा और बढ़ जाती है.

“सावन आईल मन भावन आईल
कदम गाछ पर झूला लागल,
सखियन के गलबहिया डाल
मजा लूटे मोर ननदी हजार...,”

सांच को आंच नहीं,ऋतुओं का राजा बसंत और ऋतुओं की रानी वर्षा है. दोनों ऋतु उमंग, उल्लास और उत्साह के परिचायक हैं. शरद ऋतु के ठिठुरन के बाद बसंत का आगमन होता है, जो धरा को नव चेतना से भर देता है. धरती आकाश गुलाबी रंग में रंग जाता है. जड़ चेतन में नव पल्लव खिल जाते हैं. उसी तरह सावन में गर्मी के ताप से झुलसी धरती भी हरियाली पाकर खिल उठती है.

“**सावन के आइल महीनवा**
सखी नाही बितेला दिनवा,
चहुंदिशी हरियाली का आईल,
पशुपंछियन में उमंग छा गईल**....”**

बसंत पंचमी से जन जीवन फगुआ जाता है और सावन के रिमझिम फुहार में तन बदन पर मस्ती छा जाती है. विरहन का मन सावन में ठंढ़ाता नहीं है. उसका अंत:करण मिलन की आग में दहकता रहता है. मेघों का गर्जन व दामिनी की तरंग तो सिर्फ मन की व्याकुलता बढ़ाता है .

“गर गर गरजे बादरा सखि,
चम चम चमके बिजुरिया ना,
नाहीं अइले पिया निरमोहिया से,
केसे कही दिलवा के बतिया ना...”

बादलों का गर्जन, बिजली की चमक और झमाझ बारिश की टप-टप करती बूंदे, सुसुप्तावस्था में सोयी विरहन के मन को चिहुंका देती है.

“बिजुरी सौतन चमकेली राति दिनवा,

गरजेला बादर उड़ाये मोर चैनवा.

मन नाही लागे उमड़े घुमड़ाई,

साजन के सुधिया जिया रे तड़पाई ..”

संयोग और वियोग का सावन से भावनात्मक नाता है. कभी हंसाता है तो कभी रूलाता है. अपने सजना के नेह में नहाइल सजनी पिया मिलन के लिए आतुर है. व्याकुलता में घर से निकलकर बाहर आती है और राह निहारती है. एक बटोही से अपने मन की व्यथा सुनाती है.

“लवंग पेड़ खजुर के ओकरा बीच डगर निकाली,

बाट जोहेली सांवरीन बांट जोहेली सांवरीन,

नयन दुनू लोर ढरी बाट पूछेला बटोही,

काहे सांवरीन नयन दुनू लोर ढरे.

तोरे अइसन पिया मोरे पातर,

से उहो पर देस गयो रे....

चुप होखू सांवरीन मंगिया तोरी मोती झरी,

आगि लगबो तोहरी सजल मंगिया मोती झरी

नाही छोड़ब मन के किरोध तोहरे संग नाजाई,

मोरे पिया सारी राति, तेंहू रे लट्टू एके घड़ी.....”

ननद भौजाई के नोंकझोंक और हास्य परिहास भारी मन को भी गुदगुदा देता है. ननद तो अपने घर की मालकीन होती है जब चाहे, जहां चाहे चली जाए. लेकिन भौजाई के पांवों को सामाजिक बेड़ियां जकड़कर रखती है.ननद अपनी भौजाई से बिना पूछे कहीं मस्ती करने चली जाती है. किंतु इच्छा होते हुए भी भौजाई का पांव ठमक जाता है.

“घर के पिछवाड़े कदम गछिया

ननदिया झूला झूले ना..,

कारी कारी रे बदरिया

आ जा ना मोरे अंगनवा...”

उमड़ते- घुमडते काले-काले बादल, बरसता रिमझिम फुहार, सखियों के संग हंसी-ठिठोली करती ननदें. चिड़ियों की तरह चहकता मिजाज, वर्षा ऋतु में भौजाई का मन भी पुलकित हो उठता है और वह गा उठती है -

“मौसम का मुसाफिर खड़ा रस्ते में
उसके हाथों सब कुछ लुटा सस्ते में
छोटी सी उमरिया है, लम्बी सी डगरिया रे,
जीवन है परछाई रे, पुरवा सुहानी आयी रे .... “
आखिर में सावन के हरियाली तीज, शिव-पार्वती की उपासना, हर सुहागिन का लक्ष्य रहता है ताकि उसका सुहाग अमर-अजर रहे. उसके पास सुख,समृद्धि और ऐश्वर्य बना रहे.
“कवना मासे लागेला शिव के सिरतिया,
कवना मासे ना, लागेला भगीरथिया..,
फागुन मासे लागेला शिव के सिरतिया,
सावन मासे ना, लागे ला भगीरथिया.
के लागी भूखे ली शिव के सिरतिया,
के लागी ना, भूखेली भगरथिया..,
सेनूर लागी भूखेली शिव के सिरतिया,
भतीजवा लागी ना, भूखेली भगरथिया..”

.....

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें